

નૂરી ડાઈદા



وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلاً

કુરઆન ખુબ ઠહર ઠહર કર પઢહો
સુરએ મુઝમ્મિલ, ૪

કામ વો લે લીજએ, વુમઢો નો રાઝી કરે,

ઠીક ઠો નામે રઝા, વુમ રે કરોનો ડરે

નૂરી ડાઈદા

હરબે ફરમાઈશ

અતાએ મુફિતએ આ'ઝમે હિંદ, હાફિઝો કારી

મૌલાના મુહમ્મદ શાકિરઅલી નૂરી

અમીરે સુન્ની દા'વતે ઇસ્લામી

مُتَشِين

મૌલાના મુહમ્મદ અબ્દુલ્લાહ આઝમી, નજમી
(જામેઆ હેરા નજમુલ ઉલૂમ, મહાપોલી, ભીવંડી)

મૌલાના સૈયદ ઇમરાનુદ્દીન નજમી
(જામેઆ હેરા નજમુલ ઉલૂમ, મહાપોલી, ભીવંડી)

નામ

નામ મદ્રસા

تأشير
مكتبة طيبة
١٢٤٠ هـ / ٢٠١٩ م

پیش کش
ادامہ معارف اسلامی
١٢٢٠ هـ / ٢٠١٩ م

ध्वित्दाय भात

कुआने मज्द अल्लाह तआलाका बाबरकत कलाम है. उस के पण्हने वालों को बेशुमार धवाब और झईटे हासिल होते हैं. तिलापते कुरआन की आदत बनाने वालेको क़्यामत के दिन करामत का ताज पहनाया जायेगा, उसे अल्लाह तआला की रज़ामंटी हासिल होगी, उसके दरजे बलंद होंगे, 'कुरआने पाक' कब्र में तिलापत करने वाले का साथी होगा, और उस की हिज़ाज़त ली करेगा और क़्यामत के दिन उस की शज़ाअत ली करेगा. तिलापते कुरआन का अेक झईटा ये ली है के इस से दिल पर लगा हुवा अंग (काट) दूर होता है.

जे लोग कुरआने मुक़द्दस से दूर है और उस की तिलापत से गाड़िल है उन के बारेमे हदीथे पाक में आया है के जिसके सीनेमें कुरआन का कोई हिस्सा नहीं उसका सीना पिरान धर की तरह है.

जे वालिदैन जे अपने बरयों को कुआने पाक की तालीम देते हैं या उन की तालीम का अरछा धन्तेज़ाम करते हैं उन की मेहनत ली बेकार नहीं जाती, अल्लाह करीम उन वालिदैन के अगले पिछले गुनाह मुआज़ इरमा देता है, क़्यामत के दिन उन वालिदैन का चेहरा चोदहवीं के चाँद की तरह चमकता होगा, उन के दरजात बलंद होंगे, उन को नूर का ऐसा ताज पहनाया जायेगा जिस की रोशनी आज़ताब की तरह होगी.

यहां ये बात अरछी तरह जहन में रभिये के तिलापते कुरआन से उपर त्रिक किये हुवे झईटे और इज़ीलतें उस वक़्त हासिल होगी जब के कुरआने मुक़द्दस की तिलापत उस के आदाब और हुकूक़ का लिहाज़ करते हुवे की जाये. सहीह मभारिज और सिज़ात के साथ हुइइ अदा किये जायें.

तिलापते कुरआन किस तरह की जाये ? इस के बारेमें कुरआने पाक में अल्लाह तआला ईशाद इरमाता है

وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا

तरजुमा : कुरआन को तरतील के साथ पण्हो (स. मुक़द्दिमल, आ: ४) इस आयत की तइसीर में हज़रते अली क़ुम अल्ले वजहे करीम ने तरतील का मतलब ये बयान इरमाया के تَجْوِيدُ الْحُرُوفِ وَمَعْرِفَةُ الْوَقُوفِ

यानी तरतील का मतलब यह है के हुइइ को सहीह मभारिज और सिज़ात के साथ अदा किया जाये और वक़्इ करने (हहरने)की जगहों को पेहयाना जाये.

जब इस तरीके से कुरआने पाक की तिलापत होगी. तो हदीथे पाक की रोशनी में उस से यह इज़ीलत हासिल होगी के السَّاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ السَّفَرَةِ لِيَرَاهُ فِي رَأْسِهِ

तरजुमा : कुरआन की तिलापत का माहिर नेकी वाले, धन्त वाले इरिशतों के साथ होगा. (सहीह मुस्लिम, हि. १, पेज-५४८)

अगर कोई शप्स बगैर मभारिज और सिज़ात के कुआने पाक की तिलापत करता है तो वो धवाब पाने और झईटा उठाने के बजाये गुनाह और नुकसान

उठाना है कयूं के उससे कुआने पाक के लइज़ का मा'ना नदल सकता है.

जेसे قَلْبٍ का मा'ना "दिल" है अगर कोई उसकी जगह قَلْبٍ पण्हे तो उसका मा'ना "कुता" हो जायेगा. इसी तरह قَرَأَ का मा'ना "पण्ह" होता है अगर कोई उसकी जगह فَرَع पण्हे तो उसका मा'ना "दरवाज़ा जटजटाया" हो जायेगा.

त्रिभेदारान पर ज़रूरी है के वो अपने बरयों को सहीह तालीम दिलायें परना मुजरिम होंगे और क़्यामत में उस के बारेमें सुपाल किया जायेगा. हदीथ शरीइ में है:

لَكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ.

तरजुमा : "तुममें से हर कोई त्रिभेदार है और हर किसीसे उसके मातेहतों के बारेमें पूछा जायेगा." (बुजारी)

वालिदैन ध्यान दें

1. अपने बरयों को कुरआने मुक़द्दस की सहीह ता'लीम देना अपनी बुनियादी त्रिभेदारी समझें तर्बियते औलाद के हुकूक़ में से ये सब से पहला हक़ मां-बाप पर कुरआने मुक़द्दस की सहीह तालीम ही है.
2. तालीम के लायक उम्र होते ही बरयों की उमदा तालीम शुइअ करवायें.
3. बरयों से रोज़ाना दिये गये सबक़ के बारेमें पुछें और धर में वक़त मुतअरयन कर के रोज़ाना पिछले सबक़ को सुनें और आने वाले सबक़ को याद कराने की कोशीश करें, दुआयें सुनें, दीनियात पुछें.
4. जिस तरह दुन्यवी ता'लीम देने के लिये कितना ही पैसा भर्य करने से पीछे नहीं हटते इसी तरह कुआने पाक की ता'लीम के लिये अरछे मुअत्लिम की जिएमात हासिल कर के उन्हें मुनासिब इीस दें.

असातिज़ा ध्यान दें :-

1. तल्बा को सहीह तालीम देना अपनी पहली त्रिभेदारी समझें अगर तालीम देने में कोताही की और बरये की सहीह तालीम न हुइ जिस की वजह से वो बरया कुरआने मुक़द्दस को सहीह तौर पर नहीं पण्ह रहा है तो बरोजे क़्यामत उस्ताद से ली पुछताछ होगी और अगर बरये न गलत पण्हना सिप लिया तो उस्ताद ली गुनाह में बराबर के शरीक होंगे.
2. आम तौर पर मटरसों में अेक उस्ताद के पास 30-४0 बरये होते हैं जिन्हें टेक-दो घंटे में पण्हाना होता है जब के हकीकत ये है के धतने कम वक़त में धतने ज़यादा तल्बा की सहीह तालीम तो दूर रस्मी तालीम ली नहीं हो सकती लिहाज़ा उस्ताद सिई उतनेही तल्बाको पण्हाने की त्रिभेदारी कुबूल करें जिनको सहीह तौर पर पण्ह सके हैं.
3. हर तालिबे धल्म का अलग अलग सबक़ सुनें, सबक़ सुनने में पुरी तरह तयजजे दें, तल्बा की किसी गलती को न छोणें.
4. पेहले ही से तल्बा को सहीह मभारिज और सिज़ात के साथ पण्हायें.
5. आम तौर पर बरयों को तालीम देने में नरम रयेया और शइकत का बरताव करें लेकिन जइरत के वक़त समजानें, डांटनें और मुनासिब सज़ा देने से पीछे

न पहोंच जाये जिस की पजह से वो तालीम छोण कर भाग जाये या मायूसी की सुरत पैदा हो जाये.

६. डाँटने और धमकाने में नानुनासिब अल्हाज़ और बाजाज़ ख़ान से ज़रूर परहेज़ करें.

ज़िम्मेदारान ध्यान दें

१. मकतब की ज़िम्मेदारी किसी भोअतबर आलिम के सुपुर्द करें.
२. मकतब में दाखिला, ता'लीम, एम्तेहान के उस्ूलो क^३वानीन बनायें. एंस सिलसिलेमें ओलमा और क^{३३}रि हज़रात से मशवरा ली लें.
३. कुछ कुछ एनीं के बाए एम्तेहानात हों. तालीम का तरीका और तल्बा की तालीमी तरक़्की पगैरा की अच्छी तरह ज़ांय हो.
४. पण्हाने वालों को जहाँ तक हो सके ज़यादा से ज़यादा तनज़्वाह दें ताके वो दिलजमभी के साथ अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सके.
५. अगर मकतब की आमदनी हो तब ली तल्बा के लिये (थोणी ही सही) इस मुक^३रर करें अगर आमदनी नहीं है तो मुनासिब इस मुक^३रर करें. अल्बता गरीब तल्बा के लिये भुसूसी रीआयत करें.

पण्हाने का तरीका:

१. हर सभक^३ के शुर् में हिदायतें टी गध हैं उसे लाज़मी तौर पर पण्ह कर तल्बा को समझायें.
२. छोटे बरखोंको (तफ्ती के बरखोंको) नूरी क^३एँदा के हिस्सा-१ को मुकम्मल १ साल तक पण्हायें एंससे पेहले ज़तम करनेकी कोशिश ना करें. अगर बणे तल्बा हैं तो उन के हालात जानकर पक़्त से पेहले ज़तम करा सकते हैं.
३. एण्टेदा से एण्टेहा तक तजवीद की रिआयत के साथ पण्हानेका भास तौर पर अहतेमाम करें. नूरी क^३एँदा हिस्सा-१ के बरखोंको तजवीद के क^३वाएँद याद न करायें सिर् तजवीद के साथ पण्हना सिभायें और एंस मामले में तल्बा की थोडीसी कोताही से ली नज़र न डेरें.
४. जब तक अेक सभक^३ बिलकुल पुफ्ता(पक्का) न हो जाये आगे सभक न पण्हायें, हइते में अेक दिन मुतय्यन कर के आमुफ्ता (पीछे के असबाक^३) ज़रूर सुनें. जिस दिन पीछे के सभक^३ सुनना हो उससे अेक दिन पेहले तालिबे एल्म को बता दें और मुनासिब भिकदार में सइहों को मुतय्यन कर दें ताके तालिबे एल्म को याद करनेमें आसानी हो.
५. साल में चार भरतबा(तीन-तीन महीना पर) एम्तिहान लें और एम्तिहान के लिये किसी अच्छे हाकिमो क^३री को बुलायें.
६. एम्तेहान में नुमाया काभियाबी हासिल करने वाले तल्बा के लिये एनआमात

७. उस्ताद ये बातें तल्बा को बतायें जब किताब पण्हना शुर् करें, जब सभक याद करने या पण्हने के एँरादे से किताब उठायें तो किताब भोलने से पेहले अेक भरतबा ये दुआ ज़रूर पण्हें :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ.

तरजुमा: अय अल्लाह ! हम पर अपनी हिकमतें भोल दे और हम पर अपनी रहमतें कुशादा इरमा दे, अे एँजज़तो जलाल वाले!

कुप्यते हाइका ओर जहन भोलने के लिये

(१) ये पज़ीड़ा बहोत मुईद है. उस का तरीका ये है के सभक^३ याद करने से पेहले अल्पलो आभिर ११-११ भरतबा दुइद शरीफ़ पण्ह कर ये दुआ पण्हें कुप्यते हाइका मज़बूत होगा :-

الْهِىَ أَنْتَ اللَّهُ عَالِمٌ وَأَنَا عَبْدُكَ جَاهِلٌ أَسْتَلْكَ أَنْ تَرْزُقَنِي عِلْمًا نَافِعًا وَكَفِيمًا
كَامِلًا وَطَنَةً رَاقِيًا وَقَلْبًا صَدِيقًا حَتَّى آغْبِدَكَ وَلَا تُهْلِكْنِي بِأَلْجَهَاتِهِ بِرَحْمَتِكَ يَا
أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

तरजुमा: भेरे मअजूद! तू हर चीज़ का जानने वाला है ओर मैं तेरा अनपण्ह बन्दा हूँ. मैं तुजसे एंस बातका सुपाल करता हूँ के तू मुझे एल्मे नाइअ, मुकम्मल समज़, साइ तबीअत और सुथरा दिल अता इर्मा यहाँ तक के मैं तेरी एँबादत कइं, और अय तमाम रहम इरमानेपालोंसे ज़यादा रहम इरमाने वाले ! मुझे अपनी रहमत के सदक^३ जहालत से हलाक मत इर्मा.

(२) या यह दुआ ४१ भरतबा पण्हें :-

بِسْمِ اللَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ الْعَزِيزِ عَدَدَ كُلِّ حَرْفٍ تُبَيَّبُ وَيُكْتَبُ أَبَدَ الْأَيِّدِينَ وَذَهْرَ الدَّاهِرِينَ

(३) الْعَلِيمُ का मा'ना है एल्मपाला किसी तालिबे एल्म को ४० दिन तक २१-२१ भरतबा पानी पर दम बाएँ करके पिलाया जाये वो साहिबे एल्म (एल्मपाला) होगा ओर उसका हाइका रोशन हो जायेगा.

(४) उसके एँलावा ली बहोत से आमात हमारे जुजुगों ने बयान इर्माये हैं.

मथलन् : (१) मिस्वाक करना (२) शहद(मध) का एँस्तेमाल करना

(३) निहार भुँह २१ दाने किशमिस जाना (४) पाबंटी से सभक^३ पण्हना.

(५) इजर की नमाज़ जमाअत के साथ पण्हने की पाबंटी करना (६) कचरत से दुइद शरीफ़ पण्हना पगैरह.

कुछ काम ऐसे हैं जिस से कुप्यते हाइका कमजोर होता है.

मथलन् (१) गुनाह करना (२) दुनियावी मुआमलात के ताअल्लुक से हर पक़्त गमज़दा ओर इकमंड रेहना (३) गैर ज़रूरी बातों ओर कार्मों में मशगूल रहना.

(४) बलगम पैदा करनेवाली चीज़ें एँस्तेमाल करना पगैरह.

मुहुरदात-3

दर्स (3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

हुइके तहजु (अलिइ से रा) तक की मिली जुली भस्क³

ا	ب	ث	ج	ح	د
ت	ا	ث	ا	ح	ج
د	ب	ا	ث	ح	ح
ق	ر	ب	ت	ا	ج
ع	خ	ذ	د	ب	ح
س	د	ر	ت	ب	ج
ح	د	ب	ر	ب	ث

मुहुरदात-4

दर्स (4)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

हुइके तहजु (र से ग) तक की मिली जुली भस्क³

ز	ش	ر	ط	غ	ص	ع
ظ	غ	ض	س	ظ	ض	ز

मुहुरदात-5

दर्स (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

हुइके तहजु (ग से ख) तक की मिली जुली भस्क³

ظ	ط	ت	ط	ظ	ط	ض
ش	ص	ش	ط	ظ	ع	غ
س	ع	ر	ش	ض	ط	ط
ر	ز	ث	ج	خ	ت	ب
ا	ص	ب	غ	ج	ع	خ
ظ	ط	د	ر	غ	ز	ح
خ	ش	ض	س	ط	ص	ظ

مُكْرَمَات-5

دَرْس (5)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

3 مَشْکِ جُوْلِي مِیْلِي کِي تَک (ی سے ف) جَوْر تَهْکِے

ق	ل	و	ک	ف	م	ه
ء	ی	ف	ه	م	ل	و
س	ه	ک	ف	ق	ء	م
ه	ی	ء	ک	و	س	ی
ن	ه	ی	ء	ن	و	ق
ه	ف	س	ه	و	ه	ف
ه	ن	ک	ق	م	ی	ن

مُكْرَمَات-6

دَرْس (6)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

3 مَشْکِ جُوْلِي مِیْلِي کِي تَک

ش	ط	ظ	ع	غ	ج	ا
ق	ص	ظ	س	ف	ع	ر
ق	ف	ض	ش	غ	ص	ع

ف	ب	ق	ج	د	ر	ش
ط	ش	ض	ف	ء	و	ه
ه	ه	ظ	غ	ض	ف	ه
ج	ث	ب	م	ث	ا	ب
ج	د	ه	ه	و	ز	ح
س	ف	ه	ق	ر	ش	ث
ث	ح	ت	غ	ظ	غ	ا
ق	ط	ب	ج	د	ه	ه
ا	ر	د	ف	س	ح	ج
ک	س	ق	و	س	ر	ث
ء	ی	ه	ز	ش	ط	ب
ن	م	ه	ر	ه	غ	ب
س	ت	ث	ظ	ه	ن	ب

मुक़रदात-८

दर्स (८)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

हुइके मुस्तअलिथा की मश्क³

- हुइके मुस्तअलिथा उन हुइके को कहते हैं जिस को हमेशा पुर पण्डे जाते हैं.
- सात हुइके **ظ** **ض** **غ** **ط** **ق** जैसे हैं जो हमेशा पुर पण्डे जाते हैं.
- हई के पुर पण्डेने का मतलब यह है के हई को मोटा पण्डा जाये, एस का तरीक³। ये है के हई को अदा करते पकत ञबान की जण तालू की तरइ उछाअें.
- एस सबक³ में ली तजवीद (पुर हई) के क³वाएद पर ओर न हई सिई तलककुड सहीह अदा कराने की कोशिश करें.
- जिस हई को अदा करने में तलबा गलती करें तो उन्हें बार बार पण्डा कर सहीह करा हें.

ق	غ	ظ	ط	ض	ص	خ
ض	ط	خ	ق	ص	غ	ظ
ط	ض	ظ	خ	ق	ص	غ

मुक़रदात-९

दर्स (९)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

भास ध्यान देने लायक मुक़रदात

- (१) एस सबक³ में दिअे गये हुइके की अदायगी में ञयादातर बरये बल्के आम तोर पर बने लोगो से गलती हो जाती है, जैसे (**जिम** को **जिम**) **जाल** को **जाल**) पगैरा पण्डे देते हैं, एसलिचे एन हुइके की अदायगी की अरखी तरह मश्क³ कराअें .

- जब तक तालिबे एल्म एन हुइके को सहीह न पण्डे सके तब तक हरगिज आगे का सबक³ न पण्डाअें बले ञयादा दिन गुजर जाअें.

ظ	ض	ز	ذ	ج	(१)
	ص	ش	س	ث	(२)
			ع	ء	(३)
			ط	ت	(४)
			ه	ح	(५)
			ك	ق	(६)

मुक़कबात

दर्स (१०)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

हुइके की शकलो की मश्क³

मुक़कबात - हिदायात बराअे मोअलिम

मुक़कब : दो या दो से ञयादा हुइके मिल कर मुक़कब बनता है.

- एस सबक³ में तलबा को अरखी तरह समजा दिया जाये के मुक़कब होने के पक³त हुइके तहजु की शकलें अलग अलग होती हैं, उन की सारी शकलो को अरखी तरह ञहन में बिठाअें.

۲. مुरڪڪب होने के पڪ^۳ ت^۳ ن^۳ ب^۳ के लिजने की सूत अेक जैसी होती है और अकषर शुइआत के तलजा उन को पेहयानने में गलती करते हैं, लिहाज्जा उन की अरधी तरह पेहयान करपाए जाये, कयूं के मुरक्कब होने की सूत में सिई नुक्तों के ञरीआ ही उन को पेहयाना जा सकता है.

३. एस सबक^३ में जिस हई के सामने जो मिघालें हैं. पेहले उन मिघालों में से हुइइ की तलाश करने को कहा जाये, जब बरया आसानी से उन हुइइ को तलाश करे पणहने लगे तब सारी मिघालों में भौजूद सारे हुइइ को पेहयान कर पणहने को कहा जाये.

४. आगे के असबाक^३ में ली जब कली वो मुरक्कब हुइइ को पेहयानने में गलती करे तो उन्हें एस सबक^३ की तरइ लौटा कर एरलाह की जाये.

५. एस सबक^३ का मक^३सद सिई हुइइ की मुप्तलिइ शक^३लों की पेहयान करवाना है लिहाज्जा हिजजे के साथ या रपां पणहाने की कोशिश न की जाये.

نمبر شمار	حرف	ابتدائیں	درمیان میں	انجیر میں
۱	ا	---	الاسلام	دعا
۲	ب	بسم	کسبوا-ابی	ریب
۳	ت	تقوی	سکتوا-اتی	مت - ثقہ
۴	ث	ثقلت	مثل	بعث
۵	ج	جزاء	اجر-لجی	حج
۶	ح	حیوة	یحیی	نسبج
۷	خ	خیر	الخیبة	نسخ
۸	د	دعا	الدعاء	عاد
۹	ذ	ذلول	فذلک	یوخذ
۱۰	ر	رحمة	الرحمن	عمر عمر

العزیز	الزینة	زکوة	ز	۱۱
الشمس	السموت	سماء	س	۱۲
اهش	یشکر	شهداء	ش	۱۳
یختص	الصراط	صم	ص	۱۴
ببعض	یضل	ضلل	ض	۱۵
قط	اهبطوا	طعام	ط	۱۶
فظ	عظیم	ظلم	ظ	۱۷
سبع	یعمل	علم	ع	۱۸
زیغ	بالغیب	غلام	غ	۱۹
یخطف	ینفقون	فیہ	ف	۲۰
الصواعق	ینفقون	قیل	ق	۲۱
ملك	الکتب	کفر	ك	۲۲
قیل	فله	لهم-لا	ل	۲۳
فلم	لسن	من	م	۲۴
لن	منع	نعبد	ن	۲۵
لو	السلوی	وعدنا	و	۲۶
له	یستهزئ	هنالك	ه	۲۷
السفهاء	لغلا	ءاذا	ء	۲۸
التی	البیع	یعبد	ی	۲۹

हलकों के मभारिज

ء	हलक ³ के शुरुअ हिस्से से ह ³ अह ³ और ह ³ अदा होती है.
ع, ح	हलक ³ के दरमियानी हिस्से से अ ³ ब ³ और ह ³ अदा होते है.
غ, خ	हलक ³ के अफीर हिस्से से ग ³ न ³ और फ ³ अदा होते है.

अबान के मभारिज

ق	अबान की जण जब तालू से मिल जाये तो क ³ इ ³ अदा होता है.
ك	क ³ इ ³ के मभरज के बाद ही से काइ ³ अदा होता है. (यानी क ³ इ ³ को अदा करने के लिये अबान और तालू के जो हिस्से मिलते हैं उनसे कुछ आगे के हिस्से मिलाने से काइ ³ अदा होता है.)
ج, ش, ی	अबान का बीच हिस्सा जब तालू से मिल जाये तो ज ³ , शीन ³ , और या ³ गैर मद्दा अदा होते है.
ض	अबान का किनारा जब दाणह से मिल जाये तो द ³ अ ³ अदा होता है.
ل	अबान का किनारा जब मशूणे से मिल जाये तो लाम ³ अदा होता है.
ن	अबान का सिरा जब तालू से मिल जाये तो नून ³ अदा होता है.
ر	अबान के नीचे का वो हिस्सा जो के अबान के सिरे से क ³ रीब है, जब तालू से मिल जाये तो ³ अदा होती है.
ت, د, ط	अबान का सिरा उपर के सामने वाले दातों की जण से मिल जाये तो त ³ , द ³ , अदा होते हैं.
ث, ذ, ظ	अबान का सिरा उपर के सामने वाले दातों के सीरे से मिल जाये तो था ³ , अल ³ , ओथ ³ अदा होते हैं.
ز, س, ص	अबान की नोक उपर और नीचे के दांतों से मिल जाये तो ³ , स ³ , अदा होते हैं.

दोनों होटों के मभारिज

ف	नीचे का होट जब उपर के दातों के किनारों से मिल जाये तो इ ³ अदा होता है.
ب	दोनों होटों का तर (गीला) हिस्सा मिल जाये तो ³ अदा होती है.
م	दोनों होटों का भुश्क (सूखा हुआ) हिस्सा मिल जाये तो ³ अदा होती है.
و	दोनों होट कुछ भुले रहे तो ³ गैर मद्दा अदा होता है.

औइ और भयसुन के मभारिज

آ, ا, و	औइ (भाली जगह) से अलिइ ³ आ या मद्दा ³ और वाय मद्दा ³ अदा होते है. हलक ³ की भाली जगह से अलिइ ³ , बीच अबान तालू की भाली जगह से याअे मद्दा और होट की भाली जगह से वाये मद्दा अदा होता है.
غنه	भयसुम (नाक के बांसे) से हई गुन्ना अदा होता है.

हुइके तहज³ के मभरज अेक नअर में

